डॉ आभा द्विवेदी (सहायक आचार्य)
वैशाली महिला महाविद्यालय, हाजीपुर Date : / /

पूर्व कक्षा में दिए गए अवतरण का हिन्दी अनुवाद ।

① पच्चीस सौ (2500) वर्ष पूर्व, गौतमकुल में उत्पन्न सिद्धार्थ ने इस भारतभूमि को अपने जन्म से अलंकृत किया था। भागीरथी (गंगा) के उत्तरी भाग में कपिल-वस्तु नाम का एक महा-नगर था। शाक्यवंश में उत्पन्न शुद्धोदन वहाँ राज्य करता था। उसकी मायादेवी नाम की सती पत्नी हुई। और उस (माया) से सिद्धार्थ नाम के पुत्र ने जन्म लिया। वह शैशवावस्था (बाल्यकाल) से ही सदाचारी तथा विवेकशील था।

② हमारा भारतवर्ष अत्यन्त प्राचीन, अतीव पवित्र तथा विशाल है। यहाँ ही छः ऋतुएं और नारायण (श्रीहरि विष्णु) के विविध अवतार होते हैं। संसार का सर्वोच्च पर्वत हिमालय भी इसके सिर पर स्वर्णमुकुट के समान विराजमान है। यहाँ से ही गंगा, यमुना, आदि अनेक नदियाँ बहती हैं। यहाँ ही काशी, अयोध्या, मथुरा, माया आदि वे प्राचीन सप्तपुरी (सात नगर) हैं।

③ सत्य से ही संसार का अस्तित्व है। सत्य की ही महिमा से मनुष्य परस्पर विश्वास करते हैं। जैसा सत्य का महत्त्व है वैसा अन्य किसी भी वस्तु का नहीं है। सत्य बोलने से हम निर्भीक होते हैं, हमारी यश, प्रतिष्ठा और गौरव बढ़ता है। सत्यव्रती किसी भी पाप में प्रवृत्त नहीं होता। "सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं है और झूठ से बड़ा कोई पाप नहीं है" यह मत आज भी लोगों द्वारा प्रशंसित है। इसलिए हमें सदा सत्यवादि होना चाहिए।